आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2658 • उदयपुर, मंगलवार 05 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 मार्च 2022 को ज्ञानचंद गोयल, धर्मशाला सिरमौर हिमाचल प्रदेश में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नव शिव शक्ति दुर्गा मंडल क्लब रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 210, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर्स माप 14, की सेवा हुई तथा 09 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अरुण जी गोयल (समाज सेवी), अध्यक्षता श्रीमान सातीश जी गोयल (समाज सेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान सचिन जी (समाज सेवी) रहे। डॉ.सचिन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री डॉ. अरविन्द जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्निशियन) शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी),
श्री हरीश सिंह जी रावत, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक), श्री मुन्ना सिंह जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

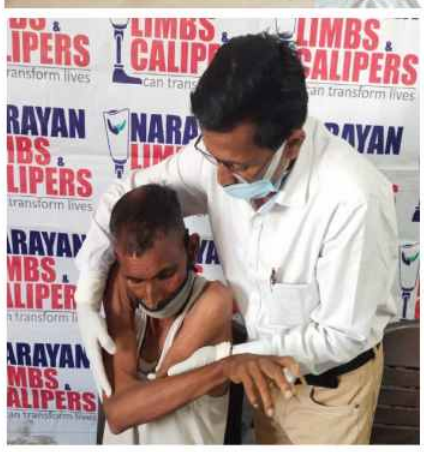

चुरू में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 15 मार्च 2022 को सामुदायिक भवन, वनविहार कॉलोनी चुरू में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता एल.एन.मेमोरियल चेरीटेबल ट्रस्ट रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 255, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर्स माप 26, की सेवा हुई तथा 20 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रमोद जी बंसल (सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण), अध्यक्षता श्रीमान अनिल जी मिश्रा (जिला आयुर्वेदिक

अधिकारी, चुरू), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् डॉ. महेश मोहन पुकार (प्रिंसिपल, पी.डी. यू. मेडिकल कॉलेज), ममता जी (उप पुलिस अधीक्षक, चुरू), श्रीमान् बनवारी लाल शर्मा जी, श्री तेजप्रकाश जी शर्मा (समाज सेवी), डॉ. महेश जी शर्मा (अध्यक्ष एल.एन.मेमोरियल चेरीटेबल ट्रस्ट) रहे। डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन) शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक), श्री बहादुर सिंह जी, श्री सत्यनारायण जी (प्रचारक सहायक) ने भी सेवायें दी।

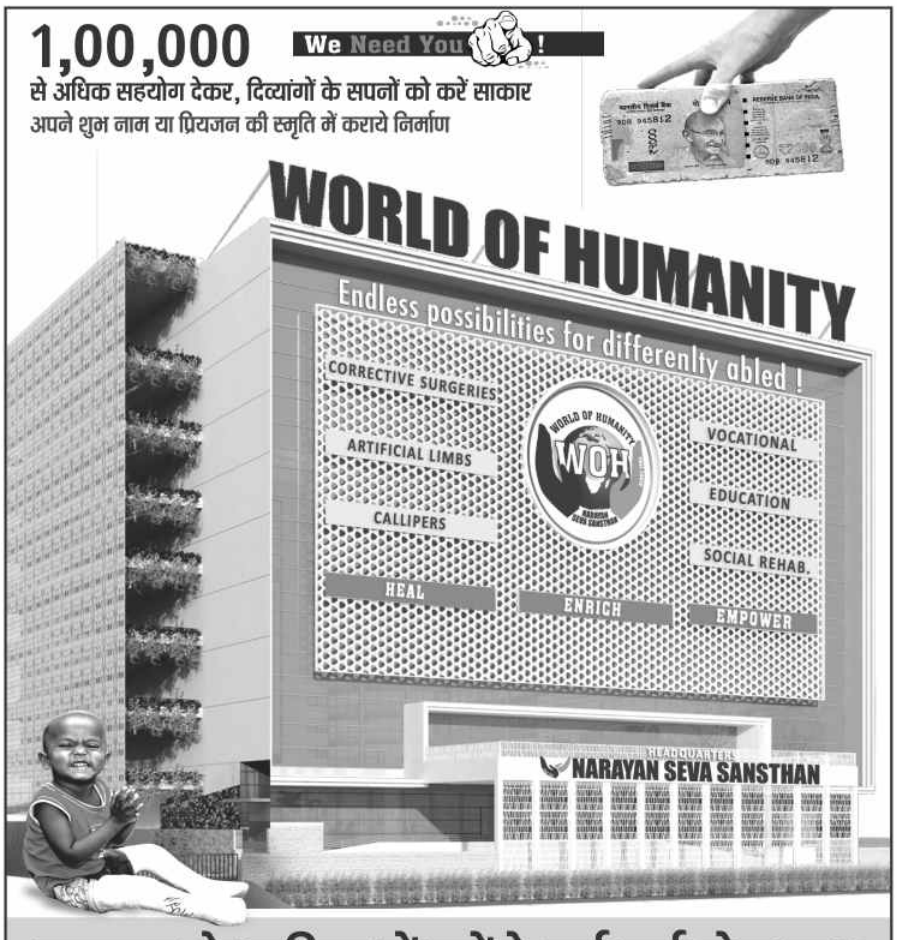

1,00,000 We Need You!
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 10 अप्रैल, 2022
स्थान
काशीराम अग्रवाल भवन, गुलवाई टेकरा, बी.आर.टी.सी. के सामने, पॉजरापोल, अहमदाबाद, सांय 4.30बजे
उत्तरबंगा मारवाड़ी सेवा ट्रस्ट, 21/2 मील, सेवा के रोड, सिलीगुडी, प.बंगाल, सांय 4.30 बजे
होटल सिराज रेजीडेंसी, खानपुरी गेट, बस स्टेण्ड के पास, होशियारपुर, प्रातः 11.00 बजे
इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पैरों की विकृति से मुक्त हुई ज्योत्स्ना

ज्योत्सना के दोनों पांव जन्मजात बाहर की तरफ मुड़े हुए थे। परिवार ने घर पर ही मालिश कर उम्मीद की कि विकृति दूर हो जाएगी। लेकिन उम्र के साथ समस्या बढ़ती गई। ठाणें (मुम्बई) निवासी ज्योत्सना को इसके कारण स्कूली शिक्षा भी छोड़नी पड़ी। परिवार की खराब माली हालत को देखते हुए कपड़ो की पैकिंग का घर बैठे काम शुरू किया। पिता टेक्सी चालक हैं, जिन्होंने अल्प आय के बावजूद बेटी का हर सम्भव उपचार करवाया, जिस अस्पताल में दिखाने की सलाह मिली, वहां इसे ले गए लेकिन लाभ नहीं मिला। तभी किसी ने इन्हें नारायण सेवा संस्थान में इस तरह की विकृतियां निःशुल्क सर्जरी के माधम से ठीक होना बताया।

ज्योत्सना को लेकर पिता अगस्त 2021में संस्थान आए, जहां विशेशज्ञ चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद पांवों के क्रमशः आवश्यक अन्तराल में ऑपरेशन किए। ज्योत्सना के अनुसार दोनों पांव की विकृति दूर हो चुकी हैं। लेकिन अभी उसे अपने पांवों पर खड़ा होने में थोड़ा वक्त और लगेगा। ज्योत्सना संस्थान में कम्प्युटर कोर्स की ट्रेनिंग कर आत्म निर्भर जीवन की ओर कदम बढ़ाने का संकल्प कर चुकी हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बाबू, मेहमान ने भगवान जसो मानजो। मेहमानदारी अच्छी करोगा तो वणी री आवाज बड़ी दूर तक जाई। ये कुकडूकू की री आवाज भी गणी लम्बी नी वे। कुकडू कू री थोड़ी देर बाद बंद वेई जावे, लेकिन जब भोजन बढ़िया कराते हो। जब सम्मान अच्छा रखते हो, जब उनका आतिथ्य अच्छा करते हो। भली आप नीचे बिठा देना। भली आपके कुर्सी नहीं हो तो कोई बात नहीं। आपके पास थाली बड़ी नहीं तो छोटी में दे देना। आपके पास सब्जियाँ ज्यादा नहीं तो, दाल–रोटी जीमा देना।

कभी–कभी, अतिथि की बात कर रहे थे तो, ये भी हमारे देह देवालय के एक ऐसे अतिथि नहीं है, लिवर देवता मेजबान है। अतिथि तो हमारा भारीर है। ये मेजबान, जब तक ये भारीर में ये मोबाईल रखा है। मेरे कहने से ये मोबाईल रखा है, और ये इसकी बेटरी है। आप कहोगे महाराज हमें क्या बताते हो ? हमारे तो एक जेब में दो दो मोबाईल है। ये जब तक सीम भारीर में है। ये सीम जब तक इस मोबाईल में है और सीम भी है और मान लो बेटरी नी वे। हाँ, जितना बेटरी भरे। आपणे तो हंसवा रोईज काम है महाराज। रोवणी बाई रोवे, अरे म्हारे पति रे काले ऑपरेभान वेईन, अणारो कई वेई ? केई वेई ? रोवे–रोवे डॉक्टर साहब, मने कियो मानवजी अने समझाई दिजो नी तो बिना ऑपरेभान के अणारे पति ने और अणाने डिस्चार्ज काले सुबह कर दांगा। पूरा वार्ड में रोवणो, रोवणो मचा राख्यों है। मैं वणाने लेग्यो एक बीस साल रो ऐसो लड़को जी के भारीर पर चादर ढ़क्योड़ो थो, चेहरो खुलो थो। चेहरा पे मुस्कराहट थी, चेहरा मुस्करा रहा था। प्रेम से प्रमुदित था, उसकी आँखों में नेह था, उसके ललाट में तेजी थी। उसका आज्ञा चक्र चमक रहा था। जैसे ही मैंने चद्दर हटायी वो महिला बोली–अरे ! ईके तो हाथ भी नहीं, ईका तो पाँव भी नहीं।

दानवीरों ने की आदिवासियों की सेवा

उदयपुर राज से 70 किमी दूर सघनवन और पहाडियों के बीच गिर्वा तहसील की पंचायत सरूपाल के गांव मोती डूंगरी में नारायण सेवा संस्थान के 7 मार्च को आयोजित निःशुल्क अन्न,वस्त्र वितरण एवं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा शिविर में वनसासी स्त्री, पुरूषों और बच्चों के उत्साह का का ज्वार उमड पडा। अति पिछडे एवं गरीब इलाके के इस सहायता शिविर में अमेरिका से आए संस्थान के दानवीर सहयोगी श्री सोहन जी चढ्ढा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मुक्ता जी सहित अन्य भामाशाहों ने भी सहभागिता की। श्री चढढा ने कहा कि संस्थान के 'नर–सेवा– नारायण सेवा' के मूलमूंत्र को साकार होते देखकर बडी खुशी हुई। शिविर में 500–600

आदिवासियों को उनकी जरूरत के मुताबिक खाद्य सामग्री,वस्त्र व अन्य सामग्री का वितरण किया गया। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने स्वास्थ्य परीक्षण किया व निःशुल्क उपचार के साथ उन्हें दवा उपलब्ध कराई। बच्चों के दांतों की सफाई कर उन्हें टूथपेस्ट ब्रश दिए, स्कुली बच्चों को स्टेशनरी दी गई। बडी संख्या में बाल कटिंग करवाकर बच्चों को नहला कर नये वस्त्र पहनाएं गए। शिविर में वरिष्ठ साधक दलाराम जी पटेल, भगवान प्रसाद जी गौड, दिलीप सिंह जी चौहान, जसबीर सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

सम्पादकीय

पीढ़ी अंतराल आजकल एक विकट समस्या के रूप में उभर रहा है। बालक–युवा और वृद्ध सब अपने आप में मुग्ध हैं। सभी को अपने क्रियाकलाप ही अच्छे प्रतीत होते हैं। यह ठीक है कि ये तीनों आयुवर्ग के सदस्य अच्छे क्रियाकलाप ही करते हैं पर आयुजन्य विषमताओं के कारण शायद ये एक दूसरे का ठीक नहीं लगते। यों देखें तो यह समस्या गंभीर इतनी नहीं भी है और है भी। इस सोच अंतराल के कारण परस्पर आदर–सम्मान या स्नेह का भाव तिरोहित होता जा रहा है। इस पीढ़ी अंतराल के कारण सामाजिक ढांचा भी प्रभावित हो रहा है। यह तो पक्का है कि निरंतर बढ़ते सूचना जगत के दायरे के कारण हर नई पीढ़ी आधुनिक हो रही है। यदि बुजुर्ग लोग इस अवश्यंभावी परिवर्तन को आत्मसात् कर लें तथा खुद को समायोजित करने का प्रयास करें तो समस्या इतनी विकट प्रतीत नहीं होगी। ऐसे ही युवा व किशोर यह समझे कि अनुभवों से पके बालों के पीछे परिवारहित का किला निर्मित है तो वे भी अपने को समायोजित करना सीखेंगे। समस्या संस्कारों की नहीं समायोजन के अभाव की है।

कुछ काव्यमय

जीणो जतरे सीवणो, या है पाकी वात।
राजी मन सूं सीवणो, यो तो अपणे हाथ।।
मनख जमारो मिल गयो, अब इणने सिणगार।
कुण जाणे कतरो जिये, कर चोखो वैवार।।
थारी मारी में उलझ, गयो जमारो बीत।
भजन राम रा रै गिया, गाया स्वारथ गीत।।
आयो जो करवा अठे, नहीं हुयो वो काम।
ना आच्छ्यो जीवण जियो, ना ही भजिया राम।।
जीवण तो ना सुधरियो, आगी आखर वेल।
कतरी मूंगी जूण ही, थें समझी ही खेल।।

क्षमा

जिन्दगी को हमने कुछ
यूँ आसाँ कर लिया,
किसी से माफी माँग ली,
किसी को माफ कर दिया।
–गालिब

माफी माँगना और माफ कर देना, दोनों ही खुश रहने के राज हैं। यद्यपि दोनों ही कार्य कठिन हैं, परन्तु असम्भव नहीं। माफी माँग लेने वाला व्यक्ति अपनी गलतियों को किसी अन्य पर नहीं थोपता। वह सदैव प्रसन्न रहता है। दूसरों की गलतियों के लिए उन्हें माफ करने वाले व्यक्ति में कभी क्रोध प्रवेश नहीं करता। वह भी सदैव प्रसन्न रहता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एक बार अपने निजी सहायक के

साथ काफी लम्बे समय तक बैठकर अत्यन्त मेहनत से कुछ मसौदा तैयार किया, जिसे अगले दिन उन्हें किसी सभा में पढ़ना था।

मसौदा तैयार होने के पश्चात् वे किसी काम से दूसरे कक्ष में गए और वापस आकर देखा कि उनका निजी सहायक खड़े–खड़े थर–थर काँप रहा था। टेबल पर स्याही की दवात गिर गई थी और वह पत्र (मसौदा) स्याही से भर गया था। यह देखकर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तनिक भी क्रोधित नहीं हुए। उन्होंने निजी सहायक को क्षमा करते हुए कहा, "चलो पुनः शुरू करते हैं।" निजी सहायक खुश हो गया।

कहा है, 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'। क्षमा वीरों का आभूषण है। आज व्यक्ति के दुःख का एक प्रमुख कारण यह भी है कि हम सामने वाले की छोटी–सी गलती के लिए भी उसे क्षमा नहीं करते और अपनी बड़ी से बड़ी गलती के लिए क्षमा नहीं माँगते हैं। क्षमा माँगना और क्षमा करना दोनों ही जीवन में प्रसन्नता लाते हैं। यदि हमें प्रसन्न रहना है और औरों को भी प्रसन्न रखना है तो हमें क्षमा को अपनाना ही होगा।

–कैलाश 'मानव'

मोह

एक बार देवर्षि नारद अपने शिष्य तुम्बरू के साथ कहीं से गुजर रहे थे। गर्मियों के दिन थे। प्यास लगने पर उन्होंने एक कुएँ से पानी पिया और पास ही के एक बरगद के वृक्ष के नीचे आराम से बैठ गए। इतने में उन्होंने देखा कि एक कसाई पच्चीस–तीस बकरे लेकर वहाँ से गुजर रहा था। तभी उन बकरों में से एक बकरा एक दुकान पर रखे मोठ खाने लपक पड़ा। जब दुकानदार का ध्यान उस बकरे की तरफ गया तो उसने बकरे को पकड़ कर दो–चार घूँसे उसके मुँह पर मार दिए। दर्द के मारे बकरा चिल्लाने लगा और मोठ के चार दाने उसके मुँह से गिर पड़े।

जब कसाई ने बकरे को पकड़ा तो दुकानदार ने उससे कहा – जब तुम

इस बकरे को काटो तो इसका मुण्ड मुझे देना, क्योंकि यह मेरे मोठ खा गया है। देवर्षि नारद ने जब ध्यान लगाकर देखा तो हँसने लगे। यह देख उनके शिष्य ने पूछा – आप क्यों हँसे? उस बकरे को जब घूँसे पड़ रहे थे, तब तो आप बहुत दुःखी हो रहे थे और जब ध्यान लगाया तो हँस पड़े, इसका क्या रहस्य है?

देवर्षि नारद ने उत्तर दिया – यह तो सब कर्मों का फल है।

इस पर उनके शिष्य ने विस्तारपूर्वक बताने का आग्रह किया तो नारद जी बोले –इस दुकान पर जिस सेठ का नाम लिख रखा है, यह बकरा वही सेठ है और दुकान पर बैठा यह व्यक्ति इसी बकरे रूपी सेठ का पुत्र है। सेठ मर कर बकरा बना और दुकान से अपना पुराना सम्बन्ध जानकर मोठ खाने लगा, लेकिन उसके बेटे ने ही उसे मारकर भगा दिया। मैंने देखा कि इतने सारे बकरों में से कोई भी दुकान पर नहीं गया तो फिर यह ही क्यों गया? ध्यान लगाने से ज्ञात हुआ कि इसका दुकान से पुराना सम्बन्ध था। जिस बेटे के लिए इस बकरे रूपी सेठ ने इतना किया, वही बेटा आज उसे मोठ के चार दाने भी नहीं खाने दे रहा और खा लिए तो कसाई से उसका मुण्ड माँग रहा है, इसीलिए कर्म की गति और मनुष्य के मोह पर मुझे हँसी आ रही है। अपने–अपने कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है तथा इस जन्म के सभी रिश्ते–नाते मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाते हैं, कोई काम नहीं आता।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश अब प्रतिदिन एक बार तो अस्पताल का चक्कर लगा ही लेता था। वार्ड में कई लोगों से मिलना–जुलना हो जाता था। इसी क्रम में उसकी भेंट एक कॉलेज के लेक्चरार से हो गई, इनका नाम सोहनलाल पाटनी था।

सोहनलाल, कैलाश को इस तरह मरीजों से मिलते–जुलते देख बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कैलाश से पूछा कि वह इतना समय कैसे निकाल लेता है। सोहनलाल किसी से मिलने आया हुआ था, उसने कैलाश को कहा कि उसके लायक कोई कार्य हो तो जरूर बताए। कैलाश को रोगियों के समक्ष पेश आने वाली दवाइयों की कठिनाई का अहसास था, उसने तुरन्त कह दिया कि इन्हें दवाइयों की बड़ी परेशानी रहती है, छोटी–मोटी दिक्कत तो वह खुद ही दूर कर देता हैं मगर उसकी भी सीमा है, उससे अधिक कर पाना उसके लिये मुश्किल होता है।

सोहनलाल, कैलाश की बात सुन कर प्रसन्न हो गया। सेवा के यज्ञ में वह अपनी भी आहुति देना चाहता था, इसका अवसर प्रस्तुत हुआ तो वह इसे हाथ से गंवाना नहीं चाहता था। वह कैलाश को दवाइयों की एक बड़ी दुकान पर ले गया तथा उसके मालिक से बात कर कैलाश को हर महीने दो हजार रुपयों तक की दवाएं उपलब्ध कराने का प्रबन्ध कर दिया। सोहनलाल की इस पहल से कैलाश का अस्पताल व उसके मरीजों की सेवा–सुश्रुशा करने का रिश्ता और घनिष्ठ तथा स्थाई हो गया।

कैलाश के पोस्ट ऑफिस में ही एक सहयोगी था जिसे सब लोग मक्खीचूस कह कर चिढाते थे। यह कैलाश को रोज कार्यालय से कहीं जाते देखता था तो एक दिन पूछ लिया कि वो कहां जाता है। कैलाश ने बताया कि सामने जो हॉस्पीटल है वहीं जाता हूं, मरीजां की छोटी मोटी आवश्यकताएं पूरी करने की कोशिश करता हूं, आप भी चलो मेरे साथ, बहुत अच्छा लगेगा। कैलाश की इस बात पर कार्यालय के अन्य साथी हंस पड़े और कहने लगे किस मक्खीचूस को साथ ले जा रहे हो। अपने ऑफिस में ट्रांसफर की पार्टी में एक रु. तक जेब से नहीं निकाल पाता, यह क्या करेगा। कैलाश ने अपने साथियों की बात हंस कर टाल दी और उसे अपने साथ ले गया।

कैलाश का यह साथी अक्सर उसके साथ अस्पताल जाने लगा। धीरे धीरे उसमें इतना परिवर्तन आया कि वह कैलाश के बिना भी अकेले ही अस्पताल जाने लगा। किसी रोगी को खिचड़ी चाहिये होती तो वह अपने घर से खिचड़ी बनवा कर लाता और उसे खिलाता। एक रोगी को कम्बल लाकर भी ओढ़ाया। जिसे सभी लोग मक्खीचूस कहकर चिढ़ाते थे उसमें ऐसा परिवर्तन देखा तो सबको आश्चर्य हुआ। इसका परिणाम यह निकला की धीरे धीरे अन्य लोग भी इस सेवा कार्य में रुचि लेने लगे।

अंश - 055

महीनों से न नहाएं न नाखून काटे

गिर्वा तहसील के आदिवासी बहुल अलसीगढ़ पंचायत के कांकरफला गांव में 7 फरवरी को नारायण सेवा संस्थान ने अपनी सामाजिक गतिविधियों के तहत अन्नदान, वस्त्रदान, शिक्षा एवं चिकित्सा सहायता शिविर आयोजित कर 40 बच्चों को जरूरत के मुताबिक गणवेश, जूते, साबुन, तेल, टूथपेस्ट–ब्रश और परिवार को राशन सामग्री की मदद देकर स्कूली शिक्षा से जोड़ा। संस्थान ने ग्रामीणों और बच्चों को साफ–सफाई व स्वच्छता की सीख देते हुए डॉ. हर्ष पण्ड्या के माध्यम से 150 बीमारों का स्वास्थ्य परीक्षण कर एलर्जी, एनीमिया, खांसी व मौसमी बीमारियों की दवाईयां दी। इस दौरान प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी जीवनलाल जी मेघवाल, सरपंच पुश्कर जी मीणा, प्रधानाध्यापक निर्मल जी कोठारी एवं संस्थान के भगवान प्रसाद जी गौड़, दल्लाराम जी पटेल, जसबीर सिंह जी व दिलीप सिंह जी सहित 30 सदस्यीय टीम ने सेवाएं दी।

सहायता सामग्री वितरण– संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी भैया के नेतृत्व में 540 आदिवासी स्त्री–पुरूशों को 15 क्विंटल मक्का, 300 लुगड़ीयां, 200 जोड़ी चप्पल, 150 धोतियां वितरित की गई। वहीं शिविर में आये करीब 350 बच्चों को मंजन करवाते हुए साबुन टूथपेस्ट–ब्रश भेंट किए। नाखून–बाल कटिंग कर नहलाया, नये कपड़ें और जूते पहनाए तथा 2 अति निर्धन एवं नेत्रहीन परिवारों को मासिक राशन व सहायक उपकरण भी दिये।

अधिक ऊर्जा के लिए नाश्ते में लें दही और केला

दही–केला एक संपूर्ण पौश्टिक आहार है। इसे छोटी उम्र के बच्चों से लेकर अधिक उम्र में भी लिया जा सकता है। दही और केले का मिश्रण न केवल सेहतमंद होता है, बल्कि इसे बनाने में बहुत कम समय लगता है। यह डिश कई मायनों में फायदेमंद है, क्योंकि केले में पोटेशियम, विटामिन सी, विटामिन बी–6, मैग्नीशियम और आयरन की मात्रा और दही में प्रोटीन, सोडियम और कैल्शियम पाया जाता है। सही मायनों में यह मिश्रण आपको पोशक तत्वों की सही मात्रा के साथ दिन की शुरूआत करने में मदद करता है। खास बात यह है कि यह एनर्जी का अच्छा स्त्रोत है। इसे खाने के बाद तत्काल ऊर्जा मिलती है।

इन नुस्खों से बढ़ाए आंखों की रोशनी

सरसों के तेल से रोजाना 15 से 20 मिनट यदि पैरो की मसाज करें तो आंखों की रोशनी बेहतर हो सकती है। रात में सोते समय बादामयुक्त दूध पीने से भी आंखों की रोशनी बढ़ाई जा सकती है। आंवले का जूस या कैंडी के साथ ही नियमित एक या दो आंवला खाने से भी आंखों की रोशनी दुरूस्त की जा सकती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

नारायण सेवा ने दी जीवन में पहली खुशी

मैं ज्योति पिता चमरूराम छत्तीसगढ़ की रहने वाली हूँ मैं एक कम्प्युटर टीचर हूँ और एम. कॉम, करना चाहती हूँ । मैं जब पांच साल की थी तो मुझे बुखार आया और मेरा पैर पोलियोग्रस्त हो गया , मैं पेर पर झुककर चलने लगी। इसी कारण मेरा स्कूल में मजाक उड़ाया जाता था। सहपाठी मुझसे भेदभाव व करने लगे। इससे मुझे काफी दुःख होता था। रात भर मैं रोती रहती थी। फिर एक दिन मैंने आस्था चैनल पर देखा कि " नारायण सेवा संस्थान " में मुझे जैसे कई बच्चों का ईलाज निःशुल्क किया जा रहा था। पेशेन्ट खुश होकर अपने सही होने की खुशी जाहिर कर रहे थे। मैंने सोचा कि मुझे भी जाना चाहिए ताकि मै भी ठीक होकर मेरा मजाक उड़ाने वालों को जवाब दे सकूं।मगर घर वाले जाने नहीं देना चाहते थे। मेरा भाई पवन मुझे उदयपुर ले जाने को तैयार हो गया। उसने अपनी आरक्षक पुलिस की नौकरी छोड़ और मुझे लेकर आया। मुझे डॉ. चुण्डावत साहब ने देखा ऑपरेशन के लिए कहा मगर पेशेन्ट की अधिकता होने कारण मुझे वेटिंग डेट मिली। मैं वापस आई और मेरा ऑपरेशन हुआ और कुछ दिन बाद मुझे डॉ. ने कैलिपर्स दे दिया। आज मैं केलिपर्स के सहारे खड़ी हो गई हूँ । मैं इतनी खुशी हूँ मानो मुझे जिन्दगी में पहली खुशी आज मिली है। मैं धन्यवाद देती हूँ नारायण सेवा संस्थान डॉ. चुण्डावत साहब को जिन्होंने मुझे खड़ा किया। उन सभी लोगों को जो नारायण सेवा में रहकर अपनी सेवा दे रहे है। और हम जैसे दिव्यांगों का भला कर रहे है।

अनुभव अमृतम्

पुष्कर मुनि जी मा. सा. पधारे, जय जयकार हुई। अहिंसा धर्म की जय, यम नियम, आसन, ध्यान, धारणा, समाधि, प्रतिहार, उसी में ध्यान आता है। ध्यान ही बुलवाता है, ध्यान ही सुनवाता है, ध्यान से काम करना, ध्यान से देखना, ध्यान से देखना कि कोई ठोकर नहीं लग जावे।

ध्यान से चलना, भगवान की कृपा ने, पूज्य बाई जी भी साथ पधारी थी सोहनी देवी जी। कपड़े वितरण, पी.जी. जैन साहब भी अपने नेत्रों से देख रहे हैं। बाबूजी आप ये कोट दीजिये, ये जर्सी दीजिये। ये सब ठाकुर जी का दिया हुआ है। अरे! शरीर भी मेरा नहीं और चित्त भी मेरा नहीं, ये चित्त का प्रपंच भी मेरा नहीं। ये संवेदना जो देह धारा, विचार धारा से बनी है ये संज्ञा पहचाने की शक्ति। ये विज्ञान कोई आया है, कान में कम्पन्न हुआ। कोई बोल रहा है, कोई सुना रहा है।

ये संस्कार सब परमात्मा के हैं। जसवन्तगढ़ का शिविर पूज्य पुष्कर मुनि जी म.सा. ने बोला–देखो अपने भाई अपने से बिछुड़ रहे हैं। कई लोग धर्म परिवर्तन इसलिए करते हैं कि आप सेवा नहीं करते हो। आप भी उनका हाथ नहीं पकड़ते हो, जो हाथ पकड़ेगा, उसके साथ हो जायेंगे। गलत क्या है? आप हाथ पकड़िये आप हाथ से ऐसा देना सीखिये।

पोंछ लो आँसू दुःखी के,
और दुःखों को बाँट लो।।
मूल मंत्र है जिंदगी का,
प्यार दो और प्यार लो।।

हम लोग डॉक्टर साहब के पास खड़े हुए। अरे! इतने बड़े–बड़े 14 डॉक्टर आये उस समय में, पालीवाल जी आये हैं, अपने साथियों को भी साथ लाये हैं। ये विष्णु शर्मा जी हितैषी जी, ये मेहता साहब, ये नवरत्न जी दुग्गड़ साहब, अरे! कमला जी बच्चों को स्नान करवा रही है। अरे! दो–चार महीनों से स्नान ही नहीं किया लगता है?

नन्हा मुन्ना बालक टाबर, नंग धड़ंगा डोले रे.... ।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 408 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023